Factors that Influence Learning

अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक

:- अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक निम्नलिखित हैं।

(1) Motivation (अभिप्रेरणा)

अभिप्रेरणा के बिना व्यक्ति कोई कार्य सही प्रकार से नहीं कर सकता है। जब किसी व्यक्ति को प्रेरित किया जाता है तब वह व्यक्ति आसानी से किसी भी तथ्य को सीख जाता है। अतः अधिगम के लिए अभिप्रेरणा अति आवश्यक है।

(2) उचित केंद्रता (proper orientation)

:- छात्र किसी तथ्य या पाठ्यवस्तु को तभी समझ सकता है जब उसमें उचित केन्द्रता हो। छात्र किसी तथ्य को सीखने के लिए, उसे उचित केंद्रता अति आवश्यक है। छात्र केंद्रित होकर किसी तथ्य या पाठ्यवस्तु को सीख जाता है। क्योंकि छात्र जब केंद्रित होकर अवलोकन करता है तो वह उसको सीख लिया जाता है।

(Students' Needs)

(3) ~~छात्रों~~ छात्रों की इच्छायें :- छात्रों की इच्छायें इस प्रकार है।

(a) पहचान पाने की इच्छा :-
जब छात्रों के नाम से बुलाया जाता है तो छात्र काफी खुश होता है तथा उसमें आत्मसम्मान की भावना उत्पन्न होती है।

(b) नये अनुभव एवं सोचने की की शक्ति :-
विशेष योजनाओं के द्वारा छात्रों को कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए तथा उनकी सहायता भी करनी चाहिए।

(c) दूसरों की सहायता की इच्छा :-
छात्रों को समूह में कार्य करने के लिए अवसर देना चाहिए। छात्रों में इससे दूसरों की सहायता करने में आनन्द आता है।
इस प्रकार छात्र एक-दूसरे

की सहायता करते हैं तथा उनमें अधिगम की क्षमता में वृद्धि होती है।

(d) उपलब्धि तथा सफलता अनुभव करने की इच्छा :- जो छात्र अपना अधिगम में उपलब्धि तथा सफलता प्राप्त किया है, इसके वैसे छात्रों को प्रसंशा करनी चाहिए। प्रसंशा करने से छात्रों में अधिगम के लिए उत्सुकतता उत्सुकता बढ़ती जाती है। जिससे छात्र सरल तरीके से अधिगम प्राप्त कर लेता है। छात्र जब अधिगम में ~~सफल~~ सफल हो जाता है तब उसे प्रोत्साहित करना चाहिए।

(प) अध्यापक का रुझान (Instructor Attitude) :- अध्यापक का छात्रों के प्रति रुझान बहुत महत्वपूर्ण होता है। अध्यापक द्वारा वास्तविक प्रोत्साहन से कक्षा में उच्च अभिप्रेरणा का माहौल बन जाता है, जिससे छात्र काफी प्रभावित होता है। अध्यापक का रुझान छात्रों के प्रति सदैव उनके हित में होता है।

अध्यापक की कार्यविधि से छात्रों की व्यग्रता को दूर किया

किया जाता है। उसे शिक्षण उपकरणों का प्रयोग कर पढ़ाते समय ध्यान को बांधे रखना चाहिए।

इस प्रकार कथन मुख्य बिन्दुओं को इस प्रकार समझा सकता है।

(1) कक्षा में किसी कथन को अनेक बार दोहराना।

(2) कथन को श्यामपट्ट पर लिखना या चित्र का प्रयोग करना।

(3) किसी कथन से पहले तथा बाद में रुकना।

(4) अधिक धीमे, या अधिक तेज नहीं बोलना / बोलना

Preparation For Teaching a class
(कक्षा को पढ़ाने की तैयारी)।

पाठ योजना को इस प्रकार विकसित किया जाता है।

(1) विषय पर छात्रों का पूर्व ज्ञान जो वह इस समय जानता है।

(2) उद्देश्य निर्धारण

(3) परिचय देना जो पाठ में सम्मिलित सामग्री को बताये।
(4) परिचय में वर्तमान पाठ का संबंध पिछले पाठ से जोड़ना।
(5) पाठ को प्रस्तुत करना

(6) अधिगम के प्रश्नों को तैयार करना जिससे ज्ञात हो कि छात्रों ने कितने भली प्रकार से पाठ के सिद्धान्तों एवं मुख्य बिन्दुओं को जोड़ा है।

(7) प्रयोग किये जाने वाले प्रशिक्षण उपकरणों की सूची बनाना।
(8) दोहराव करने के द्वारा मुख्य बिन्दुओं पर जोर डालना।
(9) एक समय - सारणी बनाना जिसमें पाठ के प्रत्येक भाग पर लगने वाले समय को दर्शाना।
(10) निष्कर्ष बताना जिसमें पाठ के मुख्य बिन्दु हो।

Reading comprehension

(पठन की व्यापकता)

पठन :- पठन ऐसी प्रक्रिया है जिसे बालक सीखकर ही प्राप्त करता है।

पठन कौशल :- क्रमबद्ध एवं विधिपूर्वक

बालक को पढ़ने का अभ्यास कराना पठन कौशल ~~कहते हैं~~ कहलाता है।

डिचेन्ट के अनुसार :- पठन लेखक द्वारा उद्दिष्ट, उल्लिखित प्रतीकों को किसी के अनुभव की विधि से इनको संबंधित करके सार्थकता देने ~~की~~ की प्रक्रिया है।

इस प्रकार शिक्षा के क्षेत्र में पठन सीखने का एक महत्वपूर्ण कौशल है। इससे छात्रों को लिखित विचारों एवं तथ्यों को समझने में सरलता होती है एवं और अर्थग्रहण की योग्यता विकसित होती है। अर्थ को समझने की योग्यता के बिना लिखित अथवा मुद्रित पृष्ठों को पढ़कर समझ पाना सम्भव नहीं है।

पठन के प्रकार (Kinds of Reading)

क्रिया के आधार पर पठन के दो प्रकार हैं।